UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 5, No. 8.1 Year-5 April, 2018

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor

Dr. Indranil Sanyal

Joint Editors

Dr. Shrabanti Maity

Dr. Avijit Debnath

PUBLISHED BY

S. K.C. School of English and Foreign Languages

Assam, India

Mob. 9415388337, Email : ijcrjournal971@gmail.com, Website : ijcrjournal.com

CamScanner

→ काव्यशास्त्रे ध्वनिसिद्धान्तः 73-74
डॉ0 अभ्युदयकान्त झा

→ भारतीय लोकतंत्र : उपलब्धि से चुनौती तक 75-79
डॉ0 अन्जू

→ गुप्तकालीन मुद्राशास्त्रीय कला 80-82
डॉ0 अहिमरश्मि द्विवेदी

→ दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के प्रमुख प्रावधान 83-86
वन्दना त्यागी

→ महिला पुलिस की कार्यदशाएं एवं सफलताएं 87-89
डॉ0 अतुल मिश्र

→ आरण्यक एवं उपनिषद ग्रन्थों में गुरु–शिष्य परम्परा 90-94
डॉ0 नवीन कुमार शुक्ल

→ मातृभाषा की महत्ता 95-96
विश्वनाथ प्रताप सिंह

→ काकोरी काण्ड और रामप्रसाद बिस्मिल : एक परिचयात्मक विवेचन 97-100
डॉ0 रामाज्ञा यादव

→ राष्ट्रीय शिक्षा नीति : शिक्षण विज्ञान 101-104
डॉ0 श्याम नारायण शुक्ल

→ भारतीय समकालीन चित्रकला में रसास्वादन एवं प्राचीन सिद्धांतों की उपयोगिता 105-108
डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद

→ मनरेगा एवं महिला सशक्तिकरण 109-111
ज्योति पटेल

→ डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का दलितोत्थान दृष्टिकोण 112-114
नेत्रपाल सिंह

→ पहाड़ी चित्रकला की तकनीक 115-120
नेहा मर्तोलिया

→ वैदिक वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में स्त्री शिक्षा 121-123
प्रीति ओम

→ नवीननाट्यशास्त्राणां परिचयः 124-128
विभाकर दूबे

→ मिथिला लोक उत्सव एवं चित्रशैली 129-132
दिक्षा जायसवाल

→ लोकगीतों में प्रश्नोत्तर प्रणाली 133-135
कुमारी चन्दा

→ फाँस : एक संक्षिप्त विश्लेषण 136-138
डॉ0 प्रकाश चन्द्र पटेल

→ अज्ञेय कृत 'शेखर एक जीवनी' की भाषिक विशेषताएँ 139-142
पूजा राय

CS CamScanner

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 5, No. 8.1, April, 2018
Impact Factor: 2.314
ISSN: 2393-8358

मिथिला लोक उत्सव एवं चित्रशैली

दिक्षा जायसवाल
शोध छात्रा, चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

भारत ही नहीं अपितु विश्वभर में मिथिला चित्रकला आज के आधुनिक समय में मधुबनी चित्रकला के नाम से जानी जाती है। मिथिला प्राचीन भारत का एक राज्य था। जो वर्तमान में उत्तरी बिहार एवं नेपाल की तराई का हिस्सा कहलाता है। प्राचीन काल से ही विदेह, तीरभुक्ति, तपोभूमि, सुवर्ण–कानन अथवा तिरहुत नाम से पुकारी जाने वाली मिथिला नगरी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित रहे हैं। जिनके चलते मिथिला को कई नामों से पुकारा जाता रहा है। मान्यताओं के अनुसार रामायण काल से ही मगध (बिहार) में स्थित मिथिला के नगरवासियों द्वारा मंगल कार्य हेतु चित्रित कला को हम 'मिथिलाकला' व 'मिथिलाशैली' अथवा मुख्यतः 'मधुबनी शैली' के नाम से सम्बोधित करते आये हैं।

प्राचीन काल से ही यहाँ अरिपन (भूमिचित्रण), भित्तिचित्रण एवं पट्टचित्रों का महत्व रहा है। इन लोकचित्रों को समृद्ध बनाने में यहाँ की महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई है। साथ ही लोकसाहित्य, लोकगीतों, लोक उत्सवों एवं लोकनाटकों का भी इन चित्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के लोकचित्र अपनी जीवन्तता एवं सजीवता के लिए विश्व प्रसिद्ध रहे हैं। वैसे तो मिथिला वासियों का यह मानना है कि मिथिला में इन लोकचित्रों को प्रथम बार मिथिला नरेश जनक की पुत्री सीता के विवाह में बनाया गया व रामायण में भी राम–सीता विवाह अवसर में महल को सुसज्जित करने की बात कही गई है। मैथिल रामायण में भी इस बात की पुष्टि होती है कि उस समय महल को फूलों, चित्रों आदि से सुसज्जित किया गया। आज भी मिथिला में मैथिल लोकभाषा में रामलीला प्रस्तुत की जाती है एवं राम की मूर्तियाँ भी बनाई जाती हैं।

मिथिला में 1934 ई. में आये भूकंप के दौरान मधुबनी जिले के सब डीवीजनल अधिकारी डब्लू. जी. आर्चर ने यहाँ का सर्वेक्षण करते समय इन चित्रों को प्रथम बार देखा। तब यह चित्र जन सामान्य के सामने प्रस्तुत हुए[1]। मिथिला के कलाकारों ने धार्मिक आख्यानों में कृष्ण लीला, रामलीला, दीना–भद्री लोक त्यौहार व राय–रणपाल आदि लोक नायकों को भी अपने चित्रों में मुख्य स्थान दिया। इन लोक कथाओं में जट–जटिन, राजा–सल्हेस व लोक त्योहारों में सामा–चकेवा भी बड़े उत्साह के साथ मनाया एवं चित्रित किया जाता है। इनकी लोकगाथा एवं लोक त्यौहार के रूप में प्रचलित बिहुला–विषहरी भी एक है जिसमें प्रत्येक सुहागिन इस दिन व्रतकर मंजूसा बनाकर जल में प्रवाहित करती हैं।

राजा सल्हेस

ब्राह्मण एवं कायस्थ द्वारा बनाये चित्रों से प्रेरित होकर दुसाध जाति की महिलाओं ने अपने प्रेरणा स्रोतों के रूपाकारों को चित्रित करना शुरू किया जिनमें पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों व देह पर बने टैटू चित्रों व सचित्र वर्णमाला के साथ लाइनों, लहरों, गोलाकारों, रेखाओं आदि रूपों ने स्थान लिया। इन कलाकारों ने अपने चित्रों को और परिष्कृत रूप देने के लिए अपने लोक देवता 'राजा सल्हेस' को भी नायक रूप में दर्शाया[2]। राजा सल्हेस दुसाध जाति के लोक देवताओं में प्रमुख स्थान रखते हैं परन्तु इन्हें अन्य जाति के लोग भी पूजते हैं। मधुबनी में पीपल वृक्ष के नीचे आज भी इनकी मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं।

राजा सल्हेस के चित्रित कथा चित्रों में इनके साथ अन्य पात्र जिसमें मोतीराम, चूहड़मल, मालिन कुसुमा आदि भी चित्रित किये जाते हैं। राजा सल्हेस को हाथी पर बैठा दिखाया जाता है जिनके साथ महावत भी चित्रित होता है। पास में कुसुम मालिन फूलों के साथ व राजा के दायें भाग में भाई मोतीराम एवं बायें भाग में भाई बुधेसर घोड़े पर सवार रहते हैं[3]। मिथिला में यह लोक उत्सव बड़ी ही श्रध्दा एवं उत्साह के साथ लोक गीत गाकर मनाया एवं चित्रित किया जाता है। कागज पर चित्रण परम्परा से पहले यह स्त्रियाँ भित्तियों पर मिट्टी की उभारदार (रिलीफ) तह लगाकर चित्रों को पूर्ण करतीं थीं।

जिनमें रंग का स्थान ना के बराबर होता था। परन्तु कागज पर चित्रण करते समय रूपाकारों के साथ ही चटख रंगों ने भी इनके चित्रों ने विशेष स्थान पाया। यह कलाकार चित्रण कार्य से पूर्व गोबर का पतला लेप बनाकर पूरे कागज़ पर कूची द्वारा फैला कर सुखा लेते हैं तत्पश्चात् उस पर काले रंग से रेखांकन कर विभिन्न चटख रंगों से रूपाकारों को रंगते हैं जिनमें गुलाबी, नीला, बैगनी व पीला प्रमुख हैं। यह चित्र प्राकृतिक एवं वानस्पतिक होते हैं। परन्तु इन समय यह बाजारी रंगों का भी प्रयोग बखूबी करतीं हैं। इस शैली को गोदना शैली एवं हरिजन शैली के नाम से भी जाना जाता है। इस चित्रशैली को मुख्यतः

CamScanner

मधुबनी के लहेरियासराय में बसी हरिजन व दुसाध जाति की स्त्रियों द्वारा किया जाता है। यहाँ की अन्य अनुसूचित जातियों में Malis, Domes, Hajams, Pasis व Dhobis भी आते हैं परन्तु इस चित्रकारी में पासवान व दुसाध जाति पूरी तरह से शामिल है। "1970 ई. के लगभग जर्मन फिल्म निर्माणकार एवं फोकलोरिस्ट 'एरिका मोसर' जो कि जितवारपुर में एक Documentary Film बनाने आयी हुई थीं। वह इन स्त्रियों की देह में बने गोदना चित्रों को देख कर प्रभावित हुई एवं उन्होंने ही सर्वप्रथम इन महिलाओं को गोदना के इन रूपाकारों को चित्रों के रूप में बनाने के लिए प्रेरित किया। इन चित्रकारों ने 'राजा सल्हेस' को नायक रूप में दर्शाया इनके साथ ही धार्मिक आख्यानों में कृष्ण लीला, दीना–भद्री लोक त्यौहार व राय–रणपाल आदि लोक नायकों को भी अपने चित्रों में मुख्य स्थान दिया। इस गोदना शैली की अग्रणी कलाकारों में जितवारपुर की जमुना देवी, लहेरियागंज की चानो देवी, रौदी पासवान, शान्ति देवी, सीवान पासवान, यमुना देवी आदि प्रमुख हैं।

सामा चकेवा

सामा चकेवा मिथिला का एक प्रचलित लोक उत्सव है जिसे सर्दियों के मौसम में दूर देशों से आने वाले पक्षियों एवं रंग–बिरंगी चिड़ियों के स्वागतार्थ रूप में मनाया जाता था। परन्तु अब इसे भाई–बहन के घनिष्ठ सम्बन्ध रूप में भी मनाया जाता है। जिनमें सामा बहन रूप में एवं चकेवा भाई रूप में चित्रित होता है।[4] यहाँ की स्त्रियाँ सामा–चकेवा के स्वागत के लिए अनेक प्रकार की मूर्तियों की रचना करती हैं। मिट्टी के बने खिलौनों को विभिन्न प्रकार के रंगों से सुसज्जित यह बाँस की डलिया बनाकर उनमें पक्षियों के खिलौनों को रखती हैं। इस उत्सव से जुड़ी अनेक गाथाओं को सखियों के साथ गाते हुए घर से बाहर निकल कर कुछ दूर घूम कर पुनः घर वापस आ जाती हैं। कहीं कहीं इन्हें भित्तियों पर भी चित्रित किया जाता है। मिथिला में यह उत्सव नौ दिनों तक बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है।[5] यह सभी लोक उत्सव ना ही इनके जीवन बल्कि इनकी लोक भावनाओं से भी जुड़े हुए हैं। इन विषयों पर बने चित्रों द्वारा हम इनके लोक जीवन से जुड़ कर इन उत्सवों के सारगर्भित अर्थों को और बहतर समझ पाते हैं। इसी सामा–चकेवा से सम्बंधित अनेक कहानियों को कागज पर चित्रित कर अपने साथ ही ये अनेक लोगों को अपनी लोक भावना से जोड़तीं हैं। यह लोक उत्सव मिथिला की सभी जातियों द्वारा मनाया व चित्रित किया जाता है।

मधुश्रावणी

मधुश्रावणी लोक पर्व मिथिलांचल में विशेष रूप से मनाया जाता है। जिनमें मधुश्रावणी अरिपन लिखने की प्रथा है। यह पर्व नवविवाहित स्त्रियों द्वारा विवाह के प्रथम वर्ष सावन के माह में शुरू होकर चौदह दिनों तक चलता है। सावन के कृष्ण पक्ष के पंचमी के दिन इस व्रत की शुरुआत विषहारा के जन्म की कथा से शुरू होती है। इन दिनों नव विवाहिता व्रत रखकर गणेश, मिट्टी एवं गोबर से बने विषहारा एवं गौरी शंकर की विशेष पूजा कर महिला पुरोहिताइन से कथा सुनती हैं। इस पूजन के लिए संध्या के समय महिलायें सखियों के साथ गीत गाकर फूल तोड़ती हैं एवं उन्ही फूलों से सुबह पूजन कर तेरह दिनों तक पूजन स्थल पर अखंड दीप जलाती हैं। प्रत्येक दिन भिन्न–भिन्न नागों की पूजा कर अलग–अलग कथाओं में विषहरी, बिहुला, मैना पंचमी, मनसा, मंगला गौरी, प्रथ्वी जन्म, समुद्र मंथन एवं सती की कथा व्रती को सुनाई जाती है। यह व्रत विशेष रूप से पति की दीर्घ आयु के लिए किया जाता है। इस व्रत में ससुराल पक्ष से आये अन्न एवं वस्त्र का प्रयोग विशेष रूप से होता है।

इस व्रत में पूजा स्थान के दोनों ओर भूमि पर अरिपन लिख कर, मैनी के दो पत्तों व पुरैन (कमल का पत्ता) पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाकर लिखे अरिपन के ऊपर इन पत्तों को रखा जाता है। जिनमें बाएँ भाग के पत्तों के चित्र में एक सौ एक सपिर्नी के चित्र सिंदूर व काजल से लिखे जाते हैं जो बहिन कहलाती हैं एवं दाहिनी तरफ रखे पत्ते पर पिठार से एक सौ एक सर्पों के चित्र बनाये जाते हैं जो एक सौ एकन्त भाई कहलाते हैं। इसके साथ ही गौरी–शंकर, विषहरी (नाग देवता) की पूजा भी की जाती है।[6] इन चित्रों के बीच पूजा करने वाली व्रती के सामने सूर्य, चंद्रमा, नवगृह, साठी एवं गौर का चित्र भी चित्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त मिथिला के लोक उत्सव में 'सतुईन' भी कहीं–कहीं देखने को मिलता है जिसमें स्त्रियाँ सत्तू एवं गुड़ के पकवान बनाकर पूजा करती हैं।

रामलीला

मिथिला के लोकनाटकों एवं लोक उत्सवों में से रामलीला भी एक है। जिसे मिथिलावासी बड़े ही उत्साह के साथ मनाते हैं। इनमें दोहों एवं चौपाइयों का भरपूर प्रयोग होता है। यह नाटक यहाँ की नाटक मंडलियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता हैं जिनमें बारह से अठारह वर्ष के तक के युवकों को चुना जाता है। सभी पात्र पुरुषों द्वारा ही किये जाते है। स्त्रियाँ इनमें न के बराबर स्थान लेती हैं।[7] यह लोकनाटक ग्यारह या

CamScanner

कभी कभी तेरह दिनों तक चलता हैं। जिनमें रामलीला के कुछ महत्वपूर्ण अंशो का प्रदर्शन होता है जिनमें धनुषयज्ञ, सीता स्वयंवर, वनवास, सीताहरण, लंकादहन, रावन वध आदि। कहीं–कहीं यह रामलीला मैथिल भाषा में भी प्रस्तुत की जाती है जिससे ग्रामीण मिथिला वासी इसका आनंद उठा सकें। मिथिला में यह लोकनाटक बड़ी ही श्रद्धाभाव एवं उत्साह के साथ देख जाता है क्योंकि जनक पुत्री सीता मिथिला की थी इसलिए उन्हें कहीं कहीं वैदेही, मैथिली, जानकी आदि नामों से संबोधित किया जाता है। मिथिला में यह लोक नाटक न केवल मनाया जाता है बल्कि इसे यहाँ की महिलाओं द्वारा चित्रित भी किया जाता रहा है। इनके चित्रों में सीता–राम आदर्श रूप में चित्रित किये जाते हैं जिनमें सीता स्वयंवर, राम दरबार, वन को जाते राम लक्ष्मण आदि विषयों को प्रमुख स्थान दिया जाता हैं। यह चित्र भित्तियों एवं कागज दोनों में ही चित्रित किये जाते रहे हैं। सीता–राम इनके चित्रों के प्रमुख विषय रहे हैं।

मंजूसा कला

बिहुला–विषहरी की लोक गाथा अति प्रचलित है जिसके अनेक पात्रों का चित्रण बड़ी बखूबी से किया जाता है जिनमें चंदो नामक व्यापारी, विषहारी नागपूजा का विरोध किया करता था। इसी वजह से उसके कई पुत्रों की मृत्यु सर्प द्वारा डसने से हो गई। एक बार उसके पुत्र 'बाला' को उसकी सुहागरात के दिन सर्प ने डस लिया। बाला की पत्नी बिहुला ने सर्पदंश उपचार हेतु मंजूसा आकार का जलयान बनवाया जिस पर लहसुन नामक चित्रकार ने चित्रकारी की थी। उसने अपने पति बाला का शव उसमें रख कर स्वयं बैठ कर उस जलयान को जल में प्रवाहित किया एवं स्वयं सर्पों की अधिष्ठात्री देवी मनसा की पूजा अर्चना की जिससे देवी ने प्रसन्न होकर पुनः जीवन दान दिया।[8] तब से प्रत्येक सुहागिन इस दिन व्रत कर सुहाग की रक्षा के लिए चित्रकारों द्वारा बनाये मंजूसा जल में प्रवाह करती हैं जो कि एक मंदिर अकार में होती है जिसमें आठ पाओं भी होते हैं[9]। मिथिलांचल के कई हिस्सों में एवं विशेष रूप से यह भागलपुर जिले में मनाई जाती है। यह कला मुख्यतः माली जातियों द्वारा की जाती है। इसे मंजूसा कला नाम से भी संबोधित करते हैं जिसमें लाल, पीला एवं हरा रंग मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। चित्रों में अनेक पत्रों के साथ नाग देवता का भी चित्रण होता है।

यह सभी लोक उत्सव मिथिलावासियों के सामाज, ग्रामीण जीवन व संस्कृति से जुड़े हुए हैं जो सरल ग्रामीण जीवन व्यतीत कर रहे लोगों के मनोरंजन के साधन भी हैं। इन लोक उत्सव एवं गाथाओं को अपने चित्रों में स्थान देकर इन चित्रकारों ने अपने लोक जीवन से जुड़े भावनात्मक पक्षों को जन सामान्य से जोड़ा है। यह लोक उत्सव एवं कथाएँ इन्हें आपस में जोड़े रखने का कार्य भी करतीं हैं जिससे यह एक जगह एकत्रित होकर इन उत्सवों का आनंद ले सकें। मिथिला वासियों ने अपने इन लोक नाटकों, गाथाओं, कथाओं एवं उत्सवों को चित्र रूप देकर इन्हें अधिक आकर्षक ढंग से प्रस्तुत तो किया ही साथ ही दूर देशों तक अपनी संस्कृति का परिचय भी दिया है। जिनके द्वारा हम मिथिला के सामाजिक, आर्थिक जीवन इनकी लोकश्रुतियों, प्राचीन संस्कृति एवं इनके भावनात्मक पक्षों को समझ पाते हैं।

संदर्भ :

1. आर्चर, मि. *इंडियन पापुलर पेंटिंग इन इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी,* यू.एस.बी. पब्लिशर, नई दिल्ली, 1977, पृ0 66–68.
2. निशान्त, 'दी वोर्शिप ऑफ सेल्हेशा', *कला दीर्घा,* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ विसुअल आर्ट, अप्रैल 2015, पृ0 80–81.
3. नील, रेखा. 'हरिजन पेंटिंग ऑफ मिथिला', *मार्ग,* वोल्यूम 54, 2003, पृ0 64–77. एवं रेखा दास, *बिहार के प्रमुख लोकनाटकों की शैलियों का विवेचन,* सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1994, पृ0 109.
4. अवधेश अमन, *मिथिला की लोक चित्रकला सफलताएँ–असफलताएँ,* ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1992, पृ0 26–27.
5. लक्ष्मीनाथ झा, *मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला,* दरबंगा, बिहार, 1999, पृ0 159–161.
6. वही. लक्ष्मीनाथ झा, पृ0 35–37.
7. रेखा दास, *बिहार के प्रमुख लोकनाटकों की शैलियों का विवेचन,* सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1994, पृ0 72.
8. तारकनाथ बड़ेरिया, *भारतीय चित्रकाला का इतिहास,* नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, नई दिल्ली, 2004, पृ0 19.
9. मनोज कुमार बच्चन 'मंजूसा कला', *समकालीन कला. अ जर्नल ऑफ कंटेम्पररी इंडियन आर्ट,* ललित कला अकादमी, नई दिल्ली 2018, पृ0 75–79.

CamScanner

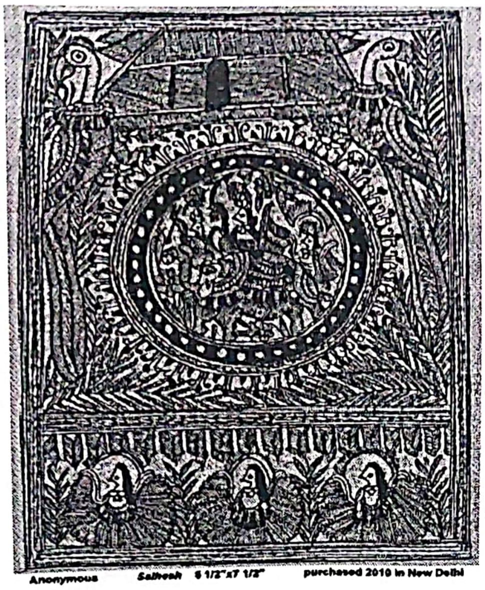

चित्र सं. 1. राजा सल्हेश, गोदना शैली, 5 1/2" x 7 ½" पेन ऑन पेपर, वर्ष 2010.

चित्र सं. 2 मधुश्रावणी अरिपन

चित्र सं. 3. सामा चकेवा, लोक उत्सव, भरनी शैली, पोस्टर कलर.

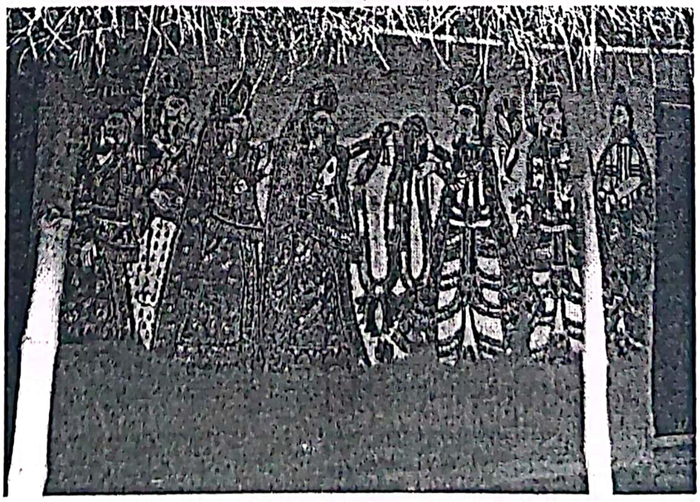

चित्र सं. 4. सीता–राम विवाह, भित्तिचित्र, 5x10 foot, विभा दास, एक्रेलिक रंग, वर्ष 2018

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 10.1 II May, 2018

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
Mob. 9415388337, Email : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishtijournal.com

CamScanner

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 10.1, May, 2018
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

अनुक्रमणिका

☞	प्राचीन कालीन कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य में वैश्य तथा शूद्रों के कर्तव्य डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह	1-4
☞	आदिवासी समाज में जेंडर एवं शिक्षा सपना कुमारी	5-9
☞	सामाजीकरण में परिवार तथा विद्यालय की भूमिका सुश्री नीलू सिंह	10-12
☞	पूर्व मध्यकाल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का अवलोकन स्वयंप्रभा आशमा	13-16
☞	जनपद मऊ के नगरीय–ग्रामीण जनसंख्या का एक प्रतीक अध्ययन सुशील कुमार एवं डॉ0 विंध्याचल सिंह यादव	17-20
☞	मिथिला चित्रकला में महिला कलाकारों की भूमिका दिक्षा जायसवाल	21-26

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 10.1, May, 2018 ISSN : 0976-6650

मिथिला चित्रकला में महिला कलाकारों की भूमिका

दिक्षा जायसवाल
शोध छात्रा, चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मिथिला लोक चित्रकला वर्तमान समय में मधुबनी चित्रकला के नाम से जानी जाती है एवं कई वर्षो से इन ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोक चित्रकारों के आय का साधन भी बनी हुई है। इन चित्रों को यहाँ की स्त्रियों द्वारा बनाया जाता है इसलिए यह चित्र स्वाभाविक रूप से घरेलू व स्वदेशी होते हैं। "यह चित्र कितने समय तक रहेंगे यह भित्ति एवं दीवारों पर निर्भर करता है क्योंकि इन दीवारों को चित्र बनाने से पूर्व गाय के गोबर, गेरू, भूसी एवं मिट्टी आदि के मिश्रण से निर्मित किया जाता है जिससे चित्रों को रेखांकन व रंगांकन करने में सरलता हो।[1] मान्यताओं के अनुसार रामायण काल से ही मगध (विहार) में स्थित मिथिला के नगरवासियों द्वारा मंगल कार्य हेतु चित्रित कला को हम 'मिथिलाकला' व 'मिथिलाशैली' अथवा मुख्यतः 'मधुबनी शैली' के नाम से सम्बोधित करते आये हैं। मिथिला वासियों का यह मानना है कि मिथिला में इन लोकचित्रों को प्रथम बार मिथिला नरेश जनक की पुत्री सीता के विवाह में बनाया गया व रामायण में भी राम–सीता विवाह अवसर में महल को सुसज्जित करने की बात कही गई है।

मधुबनी लोक चित्रकला को विकसित करने में मिथिला की ग्रामीण महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है साथ ही लोकसाहित्य, लोकगीतों, लोकनाटकों व लोक गाथाओं का भी इन चित्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन चित्रों के विषय प्रायः उनके दैनिक जन–जीवन एवं सामाजिक विषयों से जुड़े हुये होते थे परन्तु समकालीन समय में इनकी चित्रण परंपरा के साथ ही इनके विषयों में भी परिवर्तन आया है, जिसका प्रमाणित स्वरूप हमें इस विधा में वर्तमान समय में हो रही चित्रकारी को देखने से मिलता है। इन महिला चित्रकारों ने इन लोकचित्रों को अति स्वाभाविक रूप में न सिर्फ संजोया बल्कि अपने घर की बालिकाओं को भी इस विधा में शिक्षित भी किया। इन महिलाओं ने अपनी संस्कृति, रीति–रिवाजों व मांगलिक उत्सवों के जरिये इस लोक चित्रशैली को जीवित ही नहीं रखा अपितु अपनी आर्थिक जरूरतों एवं सामाजिक स्थिति में भी सुधार किया है। इसलिए यह लोककला इनके अध्यात्मिक मूल्यों, संस्कृति, सामाजिक भावनाओं के साथ–साथ आर्थिक पक्षों से भी जुड़ी रही।

चित्रकारी के मुख्य क्षेत्रों में मधुबनी, जितवारपुर, सहरसा, दरभंगा आदि प्रमुख हैं। "इस चित्रकला को ग्रामीण क्षेत्र में सभी जातियों जैसे–राजपूत, सोनार, अहीर, दुसाध, कायस्थ एवं ब्राह्मण आदि ने अपनाया। परन्तु मुख्य रूप से इस मैथली चित्रकला में महापात्रा ब्राह्मण एवं कायस्थ जातियों का नाम आता था।[2]" यहाँ मुख्य रूप से तीन प्रकार का चित्रण कार्य होता आया है जिनमें भित्तिचित्रण, अरिपन (भूमिचित्रण) एवं पट्टचित्रण विशेष हैं परन्तु इनके अंतर्गत भी कई शैलीगत विभिन्ताएं पायी जातीं हैं जिनमें कोहवर गृह (नवविवाहितों के कक्षों में किया जाने वाला चित्रण), भरनी शैली, कचनी शैली (रेखांकन द्वारा), तांत्रिक शैली एवं गोदना शैली हैं। इन भित्तिचित्रों में रंग प्रायः प्राकृतिक एवं वनस्पतिक होते थे जिनमें लाल के लिए सिंदूर, पीला हल्दी से, नीला नील से एवं हरा पत्ते को पीसकर प्रयोग में लाते थे। मिथिला की लोक एवं पारंपरिक कलायें अद्वितीय हैं जिनमें सिक्की, मूर्तिकला, सुजनी 'कढ़ाई' आदि कई कलायें शामिल हैं परन्तु लोक चित्रकला का अपना अलग स्थान एवं पहचान हैं। जो वर्तमान समय में गैलरियों व प्रर्दशनियों का हिस्सा बन यह अपना मान बढ़ा रही है।

मिथिला क्षेत्र में 1934 ई. में आये भूकंप के दौरान मधुबनी जिले के सब डिवीसनल अधिकारी डब्लू. जी. आर्चर ने यहाँ का सर्वेक्षण करते समय इन चित्रों को प्रथम बार देखा व 1949 ई. में मार्ग पत्रिका, अंक 3 में एक लेख 'मिथिला पेंटिंग' के नाम से प्रकाशित किया। जिससे इस लोक चित्रकला का परिचय भारत ही नहीं अपितु दूर देशों में बैठे लोगों को भी हुआ आर्चर जी ने 1930 ई. के दौरान लगभग 200 भित्तिचित्रों के छायाचित्र खींचे व प्रिंट शीट के साथ कुछ 50 चित्रों का संग्रह 'इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी', लंदन में जमां किया जो वर्तमान समय में 'ब्रिटिश लाइब्रेरी' लंदन के संग्रह में शामिल हैं।[3]

मिथिला लोकचित्रों को प्रारम्भिक तौर पर व्यवसायिक रुप तब मिला जब 1966–67 ई. में मिथिला भारी सूखे की समस्या से गुजर रहा था । भारत सरकार द्वारा 1967 ई. में बिहार को इस समस्या से राहत दिलाने के लिए व्यावहारिक उपचार हेतु विचार किया गया व कई परियोजनाओं की शुरुआत हुई। जिनमें

CamScanner

मिथिला के मधुबनी क्षेत्र के कई गाँव जितवारपुर, रांटी आदि की महिलाओं ने बढ़ कर हिस्सा लिया व परियोजना के तहत भित्तिचित्रण चित्रित विषयों को कागज पर उकेरने का कार्य प्रारम्भ किया।

इन महिला कलाकारों में जगदम्बा देवी, सीता देवी, महासुंदरी देवी व कर्पूरी देवी आदि ने प्रमुख भूमिका निभाई जिनमें से कुछ चित्रकारों का परिचय नीचे दिया गया है। Mildred Archer की बुक 'इंडियन पापुलर पेंटिंग' के अनुसार इस परियोजना में 'पुपुल जयकर ने महत्वपूर्ण योगदान दिया इन्होंने इस कार्य के लिए उपेन्द्र महारथी एवं कलाकार भास्कर कुलकर्णी की सहायता ली व इन चित्रों को बनाने के लिए बाजार से खरीदे रंगों, हस्तनिर्मित कागज व कूची उन तक पंहुचाई और इन चित्रों को उसी पारंपरिक ढ़ंग से चित्रित करने की सलाह दी।[4] 'इस कथन की पुष्टि स्वयं पुपुल जयकर की पुस्तक 'The Earthen Drum' से होती है।[5] तत्पश्चात् जापान के एक संगीतकार व कला प्रेमी तोक्यो हासेगावा ने 1982 ई. में जापान के तोकामाची हिल्स के निगाता क्षेत्र में एक मिथिला म्यूजियम की शुरुआत की। जहाँ उन्होंने मिथिला के कई कलाकारों को आमंत्रित कर उनके चित्रों का संग्रह व प्रदर्शनियाँ आयोजित की तब से हर वर्ष कुछ कलाकार वहाँ जाकर कार्य करने के लिए आमंत्रित किये जाते हैं और हासेगावा खुद भी कई बार भारत यात्रा कर उन कलाकरों से परिचित होते हैं। जापान यात्रा कर चुकी महिओं में सीता देवी, महासुंदरी देवी, गोदावरी दत्त, कर्पूरी देवी, चौउआ देवी, दुलारि देवी आदि कलाकार विशेष हैं। आज यहाँ कई बालिकायें एवं बालक शिक्षित हैं व इस पारंपरिक लोक चित्रशैली को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

सीता देवी

सीता देवी जितवारपुर के महापात्र ब्राह्मण परिवार से थीं। इनका जन्म 1911 ई. में सहरसा में हुआ था। सीता देवी के चित्रों में मुख्य रूप से राम–सीता की कथा, महाभारत एवं पुराणों के दृश्य चित्रों का अंकन मिलता है। इन्होंने भरनी शैली (जितवारपुर शैली) में विशेष रूप से कार्य किया इसलिये मिथिला चित्रों के इतिहास में सीता देवी का नाम प्रमुख है । यह पहले कागज़ पर कूची की सहायता से काले रंग की रेखाओं द्वारा एक खाका तैयार कर लेती थीं एवं बाँस व सींक पर कपड़े के फाहे से रंगों को भरना आरम्भ करतीं थीं। इनके चित्रों में लाल, पीला, नीला, हरा, बैगनी व भूरे रंग की अधिकता स्पष्ट दिखाई देती है। बाद में इनके द्वारा विभिन्न रंगों से किये गए भरावन कार्य को जितवारपुर की अधिकतर स्त्रियों ने अपने लोकचित्रों में अपनाया। इन्हें इस लोक चित्रकला के लिए 1975 में राष्ट्रीय पुरस्कार एवं 1981 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इन्हें 1987 ई. में बिहार सरकार द्वारा रत्न सम्मान भी दिया गया एवं 2005 में इनका देहान्त हो गया।

'Kurmavatara', Sita Devi, 1960-1970s, Water color on paper, Bharni Style, 75.2X55.2 cm, Philadelphia Museum of Art

जगदम्बा देवी

कलाकार जगदम्बा देवी का जन्म 25 फरवरी 1901 ई. को मधुबनी में गाँव भोजपड़ौल के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। यह बचपन से ही अरिपन (भूमि चित्रण) किया करतीं थी व विवाह पश्चात् भी इन्होंने चित्रण कार्य जारी रखा एवं कुलकर्णी जी के प्रयास से इन लोकचित्रों को कागज पर उकेरना प्रारम्भ किया। इनके विषय भी मुख्यतः धार्मिक, पौराणिक रहे जिनमें शिव, काली, दुर्गा, सीता–राम आदि थे। यह प्रारम्भिक समय के प्रसिद्ध कलाकारों में से एक थीं।[6] शुरू–शुरू में यह अपने चित्रों

के लिए स्वयं बनाये वानस्पतिक रंगों का प्रयोग करती थीं परन्तु बाद में बाजारी रंगों का भी बखूबी प्रयोग किया। इन्होंने शिक्षिका रह कर कई बालिकाओं को इन लोकचित्रों की शिक्षा दी। यह मधुबनी कला में सर्वप्रथम राष्ट्रीय पुरूस्कार पाने वाली प्रथम महिला थीं। इन्हें 1975 ई. में पद्मश्री इसके अतिरिक्त बिहार के कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया। इन्होंने रीता देवी के साथ छः महीनों तक अहमदाबाद के विक्रम साराभाई व बहन हीरा साराभाई के यहाँ भित्तिचित्रण कार्य किया। विवाह के पश्चात् इन्होंने मिट्टी के खिलौने व बिहार में प्रचलित सिक्की की कई रंग–बिरंगी वस्तुएं भी बनाई जिनका प्रयोग गृह सज्जा के लिए किया जाता था व 1984 ई. में 83 वर्ष की आयु में इनका देहांत हुआ। यह भी जितवारपुर की भरनी शैली के लिए जानी जाती हैं।

गंगा देवी

गंगा देवी का जन्म 1927 ई. में मधुबनी से 25 किलोमीटर दूर ग्राम चतरा में हुआ था। इन्होंने पाँचवी तक की शिक्षा अपनी प्रिय मित्र महासुंदरी देवी के साथ ही ग्रहण की व इन दोनों का विवाह एक साथ एक ही गाँव में हुआ। सन्तान न होनें कारण इनका वैवाहिक जीवन कष्टपूर्ण रहा इनके पति द्वारा दूसरी शादी कर लेने से यह अकेली पड़ गई एवं इन्होंने अपना जीवन भगवान की स्तुति वन्दना में लगाया व खाली समय में चित्रण कार्य शुरू किया। चित्र बनाने में यह इतनी संलगन हुई की खाली समय पाते ही चित्रण कार्य में लग जातीं थीं। उस समय मधुबनी में चित्रों की अच्छी खरीद मिलने पर इनकी मित्र महासुंदरी देवी जी ने इन्हें अपने चित्रों को भेजने के लिए आग्रह किया। “कलाकार सन्तोष कुमार दास के अनुसार गंगा देवी जी अपने बनाए हुए चित्रों को महासुंदरी देवी के यहाँ भेजती थीं और यहीं आकर कुछ और चित्रों को दे जातीं एवं बिके हुए चित्रों की धनराशि लेते जातीं परन्तु कुछ समय बाद यह स्वयं आकार खरीददारों से संपर्क करने लगीं। इनके चित्रों में 'मानव जीवन चक्र का चित्रण', अहल्या उद्धार का चित्रण एवं इनके द्वारा की गई विदेश यात्राओं के चित्रण प्रसिद्ध हैं। इन्हें 1976 ई. में राष्ट्रीय पुरस्कार, 1984 ई. में पद्मश्री व 1986 ई. में मध्यप्रदेश द्वारा तुलसी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी विशेषतः चित्रों की रेखांकन शैली है जिसे कचनी शैली के नाम से भी जाना जाता हैं। गंगा देवी व महासुंदरी देवी के बाद रांटी गाँव की अनेकों स्त्रियों ने कचनी शैली में कार्य करना आरम्भ किया।

महासुंदरी देवी

महासुंदरी देवी का जन्म भी चतरा गाँव में हुआ था। इनका विवाह मधुबनी के गाँव रांटी में ही हुआ था। समकालीन मधुबनी चित्रकार सन्तोष कुमार दास के अनुसार इन्होंने यह चित्रण परम्परा यहाँ भी जारी रखी व 1962 ई. में भास्कर कुलकर्णी द्वारा सम्पर्क किये जाने पर इन्होंने कागज़ पर चित्रण कार्य आरम्भ किया।[7] इनके चित्रों में पौराणिक कथाओं के साथ–साथ कोहबर चित्रण, अरिपन व सामाजिक जीवन की घटनाओं का रेखाओं द्वारा संयोजन मिलता है। इन्होंने इन चित्रों को लयात्मक रेखाओं से पूर्ण किया जिस तरह से यह अरिपन व भित्तियों पर कोहबर किया करतीं थीं। इन्होंने कई विदेशी यात्राएं कीं। इन्होंने प्राकृतिक रंगों, बाजार के पाउडर रंगों में गोंद इत्यादि मिलकर अपने चित्रों में प्रयोग किये व समय अनुसार बाजारी रंगों का भी प्रयोग किया। इन्हें बिहार राज्य व भारत सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया। 2011 में इन्हें पदमश्री सम्मान से नवाजा गया एवं 2013 में इनका देहान्त हुआ।

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 10.1, May, 2018
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

चानो देवी

जितवारपुर के समीप लहरियासराय गाँव के रौदी पासवान एवं उनकी पत्नी चानोदेवी दुसाध जाति के गोदना कलाकारों में विशेष स्थान रखते हैं। बिहार में आई फिल्म निर्माणकार 'एरिका मोसर' के प्रेरित करने व ब्राह्मण एवं कायस्थों द्वारा बने चित्रों से प्रेरणा पाकर चानोदेवी ने चित्रण कार्य आरम्भ किया।[8] इन्होंने देह पर गोदे जाने वाले टैटू आकारों को चित्रों में संयोजित किया जिनमें जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों एवं ज्यामितीय आकारों का विशेष स्थान था। इन्होंने दुसाध जाति द्वारा पूजे जाने वाले 'राजा सल्हेस' को अपने चित्रों में मुख्य नायक के रूप में स्थान दिया एवं उनसे जुड़ी अनेक कहानियों को भी चित्रित किया। यह गोबर के पतले लेप को गोंद आदि से घोलकर कूची की सहायता से कागज़ पर एक बराबर फैला लेती थी एवं सूख जाने पर उसपर चित्रण कार्य प्रारम्भ करती थीं। इनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले रंगों में गहरे रंगों जैसे- गुलाबी, हरा, बैगनी, काला विशेष होते थे। यह चित्रों को काले रंग से रेखांकन कर तत्पश्चात् उनमें रंग भरतीं थीं। मधुबनी में 70 के दशक में गोबर के घोल से बने इन चित्रों को भारत एवं बाहर देशों में अधिक सराहा गया। चानो देवी के साथ ही उनके पति रौदी पासवान ने भी चित्रण कार्य किया। 2010 में चानो देवी का निधन हो गया। इस समय दुसाध जाति की लगभग सभी स्त्रियाँ एवं पुरुष इस चित्रण कार्य मे संलग्न दिखाई देते हैं एवं पूर्ण रूप से किसी भी शैली में कार्य करने के लिए सवतंत्र हैं।

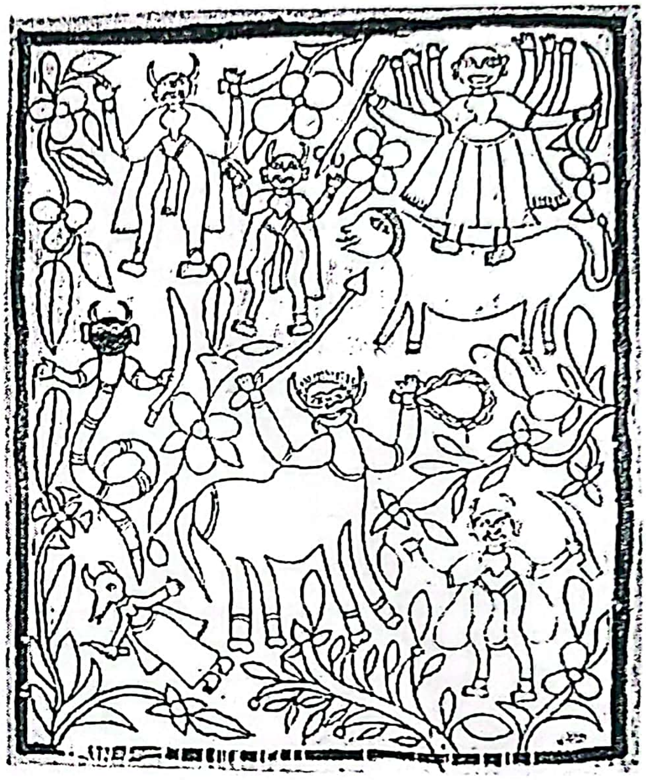

राजा सल्हेस, रेखा चित्र-चानो देवी

यमुना देवी

यमुना देवी ने भी हरिजन परिवार से होने के कारण अपने जातीय देवता 'राजा सल्हेश' के जीवन उपाख्यानों को विशेष रुप से चित्रित किया है। इनके द्वारा चित्रण कार्यो में गोबर, खनिज, प्राकृतिक एवं वानस्पतिक रंगों का प्रयोग अधिक हुआ है। इन्होंने भितिचित्रण में उभारदार रीलीफ कार्य भी किया जिसे घरों की कच्ची दीवारों पर मिट्टी, गोबर इत्यादि से लेपित कर चित्रों को बनाया जाता है जिनमें रंगों का प्रयोग ना के बराबर होता है। यह रीलीफ कार्य मिट्टी की परत-पर-परत चढ़ाकर बनाये जाते हैं जिन्हें हरिजन एवं दुसाध जातियों के घरों में विषेश रुप से देखा जा सकता है। सन् 1962 ई. में मधुबनी में आये भास्कर कुलकर्णी से इनका परिचय होने के पश्चात् इन्होंने भित्तियों के अलावा कागज पर भी चित्रण कार्य प्रारम्भ किया। इनके चित्रण कार्य में गोदना रूपाकार, मछली, सूर्य देवता, पेड़, फूल, कमल, मोर एवं ज्यामितीय रुपाकार इत्यादि का अवलोकन स्पष्ट मिलता है। साथ ही प्रतिकात्मक रुपों को भी देखा जा सकता है।

यमुना देवी 'महिला विकास समिति' लहेरियांगंज की सचिव भी रहीं, इस दौरान इन्होंने लगभग 60-70 महिलाओं को इस चित्रणशैली में प्रशिक्षित किया।[9] इन्होंने दिल्ली, अहमदाबाद, मुम्बई, कोलकाता आदि जगहों पर कई प्राइवेट कार्य व प्रर्दशनियाँ भी आयोजित की। इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। इनका जन्म 1925 ई. में मधुबनी जिले के पौखरौनी गावॅ के हरिजन परिवार में हुआ एवं बचपन में ही जितवारपुर के रामजी राम से विवाह हो गया। अन्य महिलाओं की तरह इन्होंने भी इन लोक रुपाकारों की शिक्षा अपनी माता श्री मती सुवदही देवी से प्राप्त की। इनका निधन 7 सितम्बर 2003 को हुआ।

CamScanner

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 10.1, May, 2018
Impact Factor : 2.591
ISSN : 0976-6650

शशीकला देवी

शशीकला देवी मिथिला के अग्रणी कलाकारों में अहम भूमिका रखती हैं। इनका जन्म दरभंगा के बहादुर पुर जिला सन् 1938 ई. में हुआ। इन्होंने विवाह पश्चात् पति की मृत्यु हो जाने के कारण चित्रण कार्य शुरु किया। शशीकला देवी भी एक ऐसे ही परिवार से थी जहॉ इन्हें भी अपनी माता श्रीमती सुभद्रा देवी से इन भित्तिचित्रों की शिक्षा विरासत में मिली। इनकी बड़ी बहन गोदावरी दत्ता से भी इन्हें चित्रों को उकेरने का हुनर प्राप्त हुआ। जो कि वर्तमान समय में एक प्रख्यात चित्रकार हैं।

शशीकला देवी लगभग 30 वर्षो से कागज़ पर चित्रकारी कर रहीं हैं। इन्हें सन् 1982 में बिहार सरकार द्वारा 'Master Craft Person' पुरस्कार से नवाज़ा गया व सन् 1993 में भरत के राष्ट्रपति द्वारा 'Master Craft Person' के राष्ट्रीय पुरस्कार में 'Marit Certificate' से भी नवाज़ा गया।[10] इन्होंने मिथिला क्षेत्र से बाहर पटना, गया, रॉची, अहमदाबाद एवं दिल्ली व आन्ध्रप्रदेश आदि जगहों पर भी जाकर चित्रण कार्य किये हैं साथ ही दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में कई कार्यशालाओं के तहत इस चित्रकला का प्रर्दशन भी दिया है। भरत के अलावा इन्होंने अपने कार्य के जरिये देशों–विदेशों में भी यात्रायें की हैं। सन् 1987 में इनके कार्यो की एकल प्रर्दशिनी चेन्नई में हुई एवं 1994 व 1997 में हैदराबाद में, तत्पश्चात् सन् 1993 व 1998 में 'इण्डिया ओनल सेन्टर' नई दिल्ली में प्रदशनी हुई।[11] 1990 में इन्होंने जापान यात्रा भी की चित्रण कार्य के अलावा इन्होंने एप्लीक्यू डौल, सुजनी, सिक्की एवं अल्पना में भी कार्य जारी रखा। सन् 1993 में इन्हें बिहार सरकार द्वारा 'उपेन्द्र महारथी क्राफ्ट इंस्टिट्यूट' पटना में सलाहकार बोर्ड के सदस्य रुप में नामांकित भी किया गया।[12]

गोदावरी दत्ता

इनका जन्म 7 नवम्बर 1930 ई. में बिहार के दरभंगा जिले के बहादुरपुर गॉव में हुआ। इनका विवाह 12 वर्ष की आयु में मधुबनी जिले के रांटी गॉव में उपेन्द्र दत्त के साथ हुआ था। पति के नौकरी प्राप्त होते ही दूसरा व्याह कर लेने के कारण इनका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहा। इनके एक पुत्र था व इसी के साथ जीवन यापन करते हुये इन्होंने अपनी शिक्षा पूर्ण की। इन्होंने भी इन चित्रों की शिक्षा अपनी मॉ सुभद्रा देवी से गृहण की जो कि सिक्की, पेपर मेसी, सुजनी एवं मिट्टी के कार्य में सिद्धहस्त थीं। यह मॉ काली एवं दुर्गा की भक्त रही हैं। इनका परिचय जब उपेन्द्र महारथी एवं भास्कर कुलकर्णी से हुआ तब इन्होंने पारिवारिक बन्धनों के कारण चित्रण कार्य में रुचि नहीं ली, परन्तु 1970 ई. में भारत सरकार द्वारा मधुबनी जिले में हस्तशिल्प कार्यालय खुलने पर यह अन्य महिलाओं के साथ वहॉ गई एवं निंदेशक एच. पी. मिश्रा के नीरिक्षण में कार्य आरम्भ किया। कुछ समय पश्चात् इन्होंने चित्रों को बेचने के लिये चित्रण कार्य शुरु किया जिसमें जटाशंकर दास जी का काफी सहयोग मिला जो उस समय 'नेशनल टेक्सटाइल कॉरपोरेशन' बिहार में कार्यरत थे। श्री मिश्रा जी के सहयोग से इन्हें 'अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह' में पुरस्कृत किया गया एवं 1980 ई. में इन्हें राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। 1980 में ही दिसम्बर माह में इन्होंने ब्रहमानन्द कला महाविघालय में व्याख्याता रुप में सहयोग देना शुरु किया।

बौउआ देवी

बौउआ देवी मधुबनी जिले के जितवारपुर ग्राम से हैं। इनका जन्म 1940 ई. में सिमरी ग्राम के एक महापात्र ब्राह्मण के घर हुआ था। इनका विवाह जितवारपुर के ब्राह्मण परिवार में जगन्नाथ जी से हुआ। उन दिनों भास्कर कुलकर्णी जी का वहॉं आना–जाना होता था जिससे बौउआ देवी की सासुमॉं ने इनके कुछ रफ चित्रों को उन्हें दिखाया। बौउआ देवी द्वारा बने यह रेखाचित्रों ने उन्हें आकर्षित किया। कुलकर्णी जब दोबारा मधुबनी आये तब वह अपने साथ हस्तनिर्मित कागज़ ले कर आये एवं कई महिलाओं को चित्रण के लिए कागज़ बांटे जिनमें बौउआ देवी भी एक थीं।

इन लोकचित्रों में बौउआ देवी काले रंग से रेखांकन प्रक्रिया करतीं व उनके पति रंगों को भरने का कार्य करते थे। बौउआ देवी ने कई पौराणिक एवं धार्मिक चित्रों को बनाया परन्तु इन चित्रों में नाग देवता को मुख्य स्थान दिया व नाग देवता पर कई चित्रों की श्रृंखलाएं भी तैयार कीं जो इनके चित्रों की विशेषता है। इन्होंने नाग देवता से जुड़ी हुई कई लोकगाथाएं व लोक कहानियों को भी चित्रित किया। इन्हें 2017 में पदमश्री सम्मान से नवाजा गया। भारत में कई राज्यों में यात्रा कर चुकी हैं। यह 11 बार जापान व अनेक बार फ्रांस, पैरिस, स्पेन, बार्सिलोना व जर्मनी आदि देशों में भी यात्राएँ कर चित्रण कार्य कर चुकी हैं। इनके कहे अनुसार इन्हें रंगों से भरे हुए चित्र अधिक पसंद आते हैं।[13]

वर्तमान समय में इन लोकचित्रों ने राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय कई कला–संस्थानों एवं कला प्रदर्शनियों में भी स्थान पाया है। आज के समकालीन कलाकारों में बौउअ देवी, दुलारी देवी, सन्तोष कुमार दास,

CS CamScanner

शालिनी कुमारी, शांतनु दास, महालक्ष्मी कर्ण, अविनाश कर्ण, पुष्पा कुमारी व अन्य कलाकार इस कला में कर्यरत हैं। इसके अलावा इन चित्रों को व्यावहारिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं जैसे– वस्त्र, खिलौने, हैण्डबैग एवं विभिन्न सजावटी समानों में भी चित्रित किया जाता है। एक तरफ जहाँ इस कला का स्तर हम भारत के साथ ही देशों–विदेशों में विस्तृत पाते हैं वहीं समय के चलते यह कला हमें कागज़, कैनवस, वस्त्र एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली सभी वस्तुओं जैसे– बुक, डायरी, बैग, कार्ड आदि में भी भलीभाँति देखने को मिलती है। एक ओर मिथिला क्षेत्र के कुछ लोक चित्रकार इस विधा में शिक्षित हो नये प्रयोग कर इसे आर्कषित बनाते नज़र आते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ लोक कलाकार इसे केवल जीविकोर्पाजन का हिस्सा बनाकर इन रुपाकारों को हुबहु उतारते नज़र आते हैं। समकालीन समय में महिलाओं के साथ–साथ पुरुष भी इस चित्रकला के क्षेत्र में बराबर कार्य करते नज़र आते हैं।

संदर्भ :

1. Thakur, Upendra. *Madhubani Painting*, New Delhi, 1981, pp. 62-63.
2. Archer, W.G. '*Maithil Painting*'. *Marg*, vol. 3, 1949. p. 25
3. David, Szanton. '*Mithila Painting: 1949-2014*' Marg. Vol. 66, p. 35.
4. Archer, Mildred. *Indian Popular Painting in India Office Library*, USB Publisher's, New Delhi, 1977, p. 89.
5. Jayakar, Pupul. *The Earthen Drum*, New Delhi, 1980, p. 94.
6. Heinz, Carolyn Brown, '*Documenting the Image in Mithila Art*', 2006, p. 22.
7. साक्षात्कार, सन्तोष कुमार दास
8. Rekha, Neel, '*Harijan Painting of Mithila*'. *Marg* vol.54, No.3, 2003, pp. 66-69.
9. विजय कुमार चौधरी, *यमुना देवी की जीवनी एवं कृतित्व* शोध पत्रिका, प्रधान सं.– डा0 देव नारायण यादव, निदेशक सं. डा0 प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन", मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा, खण्ड–8, भाग–1, 2006, पटना, पृ. 130–132
10. 'Abhivyakti' An Exhibition of the Individual Expression in Mithila Art, Present by Crafts Museum, New Delhi, 2004.
11. उपरोक्त, रवीन्द्र लाल दास *शशीकला देवी* मिथिला शोध संस्थान", पृ. 127–129.
12. वही, रवीन्द्र लाल दास *शशीकला देवी* मिथिला शोध संस्थान", पृ. 127–129.
13. साक्षात्कार, बउआ देवी

CS CamScanner

Impact Factor : 6.963 (IIJF) UGC NO.46953

Registration No. 1803/2008 ISSN :- 2319-6297

The Original Source

Journal for All Research

An Interdisciplinary Quarterly Research Peer Reviewed Journal

Editor in Chief

Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editor

Dr. Rajeev Kumar Srivastav

Dr. B.K. Srivastav

Founder

Late Prof. S.N. Sinha

Eminent Historian & Former HOD

Dept. of History

Jammia Millia Islamia, New Delhi

Volume 6 No. -19 (April-June, 2023

Published by

Centre for Historical and Cultural Studies & Research

Varanasi (U.P.) India

CamScanner

NO.46953 Impact Factor 6.963 (IIJF) ISSN :- 2319-6297

Content.........

1. संथाली लोक साहित्य में देश-प्रेम 1-6

ईश्वर कान्ति मुर्म

2. धर्म दर्शन की समस्याएँ और सांस्कृतिक ऐक्य का वृहद् प्रयास : रामचरितमानस 7-11

डॉ0 अवनीश चन्द्र पाण्डेय

3. श्रुति स्वर विभाजन 12-17

सुरबाला

4. हिन्दी दलित महिला आत्मकथा में संवेदना ('दोहरा अभिशाप' एवं 'शिकंजे का दर्द' के सन्दर्भ में) 18-21

मेनका सिंह

5. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की स्थापना के पश्चात् उत्तर प्रदेश में स्वयं सहायता समूह के प्रदर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन 22-32

अभय सिंह

डॉ0 पारस नाथ मौर्य

6. बांग्ला उपन्यासकार सीता देवी के उपन्यासों में महिलाओं की प्रगतिशील चेतना 33-36

स्वप्ना बन्द्योपाध्याय

7. ज्योतिषीय सिद्धांत ग्रंथों में सूर्यसिद्धांत का वैशिष्ट्य 37-39

कोमल सिंह

8. आधुनिक संस्कृत साहित्य में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी विषयक महाकाव्य परम्परा 40-44

दीपिका शुक्ला

9. मिथिला चित्रों में तंत्रित तत्वों का स्वरूप 45-49

Diksha Jaiswal

****

CS CamScanner

An International Peer Reviewed Research Referred Quarterly Journal Jan. to March, 2023 Vol.5/Issue-18
UGC NO.46953 Impact Factor : 5.963 (IIJF) ISSN :- 2319-6297

मिथिला चित्रों में तंत्रित तत्वों का स्वरूप

Diksha Jaiswal*

मिथिला क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के लिये सदैव विख्यात है, यहाँ प्रचलित लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य व लोककला मैथिल संस्कृति को समृद्ध बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | मान्यताओं के अनुसार इन चित्रों को प्रथम बार मिथिला अधिपति राजा जनक की पुत्री सीता के विवाह में निर्मित किया गया था | इसी फलस्वरूप मिथिला(बिहार) के नगरवासियों द्वारा मंगल कार्य हेतु चित्रित कला को 'मिथिलाकला'अथवा मुख्यतः 'मधुबनी शैली' के नाम से सम्बोधित करते हैं | मैथिल में लोककला का स्वरुप अति व्यापक हैं, जिनमें लोकरंजक गतिविधियों का वैविध्य रूप देखने को मिलता है | इन्हीं लोककलाओं का एक विस्तृत रूप मैथिल लोक चित्रकला हैं | इन चित्रों के माध्यम से मिथिला की सामाजिक गतिविधियों, धार्मिक आस्थाओं व उनके लोक व्यवहार की मौलिक जीवन्तता देखने को मिलती है | यहाँ पौराणिक एवं धार्मिक मूल्यों के साथ ही तंत्रविघा, जादू-टोना एवं अंध-विश्वास आदि का प्रारुप भी दृष्टिगोचर होता है । इन लोक चित्रकारों द्वारा बनाये गये चित्र जितने सरल एव स्वाभाविक है, उतने ही गूढ़ तत्वों से परिपूर्ण हैं । रिति-रिवाजों एवं संस्कारों में निर्मित चित्रों में इन तंत्ररुपों का समावेश सामान्य रूप से देखने को मिलता है । मिथिला में विशेष अवसरों व देवी-देवताओं के कुल स्थानों पर चित्रित भित्तिचित्र एवं अरिपन(भूमि चित्रण) कई प्रकार के मंडलो, प्रतीकों, नव ग्रहों व स्वास्तिक आकृतियों के साथ उकेरे जाते हैं । इन अरिपनो को कुछ विशेष रेखओं, वृत्त, त्रिकोण एवं वर्गाकार आकृतियों द्वारा चावल के बने पिरठ या पिठार, गेरु आदि से रूपांकित किया जाता है। मण्डल मुख्यतः वृत्त-आकार व गोलाकार आकृति में चित्रित होते हैं, जिन्हें पूणता का प्रतीक माना जाता है। यह मण्डल एक लौकिक ऊर्जा एवं शक्ति रुप में प्रदर्शित होते हैं, फिर चाहे वह भूमि पर उकेरे गये हों या दीवारों, कागज आदि पर । मण्डल प्राचीन समय से ही लोगों की धारणाओं, जन्म, मृत्यु एवं जादुई प्रक्रियाओं में प्रयुक्त होते आये हैं | इन्हें ज्यामितिक भाषा गोला, चक्र एवं रेखाओं के माध्यम से समझा जा सकता है । इन मण्डलों एवं प्रतीकों में समय-समय पर मंत्रों का प्रयोग भी किया गया, जिसका स्पष्ट रुप आज भी ग्रामीण क्षेत्रों के पूजा के स्थनों, कुल देवताओं की जगहों एवं घर के बाहरी दरवाजों में कुछ तंत्रविघा से परिर्पूण प्रतीकों के रुप में देख सकते हैं ।

डब्लू. जी. आर्चर द्वारा खींचे गये छायाचित्रों में से एक चित्र जिसमें हम मण्डला आकृतियों में परिपूर्ण कोहबर एवं भगवान विष्णु के अवतारों के साथ ही कुछ मानवाकृतियों को एक रेलगाड़ी में बैठे पाते हैं। इस चित्र में देवी-देवताओं के प्रति आस्था एवं इनके जीवन से जुड़े उद्देश्यों की झलक साफ दिखाई देती है, जों इनके जीवन से गहरे सम्बंध रखते हैं। ये नौ मण्डला आकृतियों एवं कमल पंखुड़ियों से युक्त कोहबर मिथिला के प्रत्येक घरों में निर्मित किये जाते हैं। यह कोहबर चित्रण भी इन गूढ़ तत्वों से परिपूण होते हैं, जो नव वर-वधु की सुरक्षा, बुरी शक्तियों से बचाव एवं सुखद गृहस्त जीवन की कामना आदि उद्देश्यों से पूर्ण होते हैं। इनमें प्रत्येक चित्र का महत्व होता है। इस कक्ष में प्रवेश उपरांत नव वर-वधु देवी गौरी की अराधना करते हैं। इन चित्रों में पशु-पक्षी की आकृतियों, मानव आकृतियों साथ ही देवी-देवताओं का अपना स्थान होता है । कोहबर कक्ष में कोहबर आकृति के साथ चार कोनो में नयना योगिन का चित्रण मुख्य रुप से उकेरा जाता है, जो वर-वधु को बुरी शक्तियों से बचाव हेतु चित्रित की जाती हैं । आरंभिक समय में कोहबर चित्रण विशेष रुप से कायस्थ एवं ब्राहम्ण जातियों की महिलाओं द्वारा बनाये जाते थे, परंतु कागज पर चित्रण के उपरांत इसे लगभग सभी स्त्रियाँ चित्रित करती हैं |

* Assistant Professor Department of Painting Vasant Kanya Mahavidyalaya Kamachha, Varanasi

मिथिला में चित्रित इन तन्त्ररूपों का क्या स्वरूप है एवं यह किस उद्देश्य से चित्रित किये गये, इसके लिये हमें इन ग्रामीण जीवन व्यतीत कर रहे लोगों की संस्कृति एवं रीति-रिवाजों का अध्ययन करने की आवश्यक्ता है। इनके द्वारा प्रस्तुत कुछ पुरातन लोक गाथाओं में जादू-टोने, अन्धविश्वास, तांत्रिक शक्तियों एवं डायन आदि शक्तियों की उपस्थिति मिलती है। यहाँ के उत्सवों में प्रचलित राजा सल्हेस की लोक गाथाओं में भी कुछ मलिनों द्वारा जादुई शक्तियों का प्रयोग कर सल्हेस को वश में करने का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार मधुबनी की एक प्रसिद्ध महिला चित्रकार शांति देवी द्वारा चित्रित लोक-गाथा "गोविन्द-महाराज" में भी कुछ जादुई डाकिनो का जिक्र आया है। गाथा इस प्रकार है - एक गाँव में एक डायन जादू-टोना आदि का अभ्यास कर बुरी शक्तियों में सिध्हस्त होती है। यह डायन दिव्य एवं राजाओं के यशशवी बच्चो को चुरा कर उनको खत्म कर देती थी। एक बार एक रानी अपने प्रिय-पुत्र को डायन अपनी शक्तियों का प्रयोग कर उसे चुरा लेती है। पुत्र के वियोग में रानी अधिक विचलित होकर विलाप करने लगती है। यह देखकर महाराज-गोविन्द उन्हें आश्वाशन देते हैं कि वह उनकी कोख से एक और पुत्ररूप में जन्म लेंगें।(गोविन्द महाराज जिन्हें दुसाध लोग कृष्ण का ही एक रूप मानकर पूजते हैं।) शिशु के जन्म पश्चात् डायन अपनी शक्तियों का प्रयोग कर सभी को आश्वासित कर लेती है कि वह शिशु राजा के यश-उन्नति के लिए शुभ नहीं है। सभी जन उसकी बात मान कर नव-जात शिशु को एक बक्शे में रख कर नदी में प्रवाहित कर देते हैं। प्रवाहित शिशु को गंगा माँ पहचान लेती हैं एवं उन्हें बचाकर उनका पालन-पोषण करती हैं। वही शिशु बड़ा होकर पापों का नाश करता हैं [1]। इसी प्रकार जादुई शक्तियों को प्रदर्शित करता एक अन्य चित्र 'अ फिमेल घोस्ट' है। यह 1981 में कर्पूरी देवी द्वारा निर्मित है, जो कि भयानक एवं अलौकिक आत्माओं का एक उदाहरण है। यह चित्र लोककथाओं में से एक आकृति को दर्शाता है, जो शक्ति के रूप में अनुष्ठानों के माध्यम से पूजनीय और शांत हैं। आकृति का समग्र रूप डराने वाला है, जिसमें सम्मोहित करने वाली बड़ी-बड़ी आँखें हैं। उसके सिर पर सींग व उसके हाथ-पैर पंजे की तरह हैं,उसके हाथों से खून टपक रहा है। कर्पूरी देवी द्वारा एक न्यूनतम रंग पैलेट का उपयोग और पृष्ठभूमि सजावट की अनुपस्थिति महिला भूत की आकृति पर ध्यान केंद्रित करती है [2]। उपरोक्त उल्लिखित लोक-गाथाओं से यह अनुमान लगाया जा सकता हैं कि मैथिल लोक-जीवन से जुड़ी ऐसी अनेकों गाथाएं जो कि तंत्र-मंत्र, जादू-टोने, ओझा-धामी आदि से जुड़ी हुई हैं, जिनका इनके लोक जीवन से गहरा सम्बन्ध है। इन सभी जादुई शक्तियों से परिपूर्ण दृश्य चित्र, इनके शैलीगत जीवन के महत्वपूर्ण आख्यानों को दृश्यांकित तो करते ही हैं साथ ही इनके भय-निवारण, आत्मरक्षा, विश्वास आदि के पर्याय है।

वस्तुतः मिथिला लोक चित्रकारी में महिलाओं की भूमिका विशेष रही, परन्तु कागज पर चित्रण कार्य आरंभ होने के पश्चात् यहाँ के पुरुषों ने भी इस कार्य में विशेष रूचि दिखाई। इनमें मधुबनी स्थित जितवारपुर क्षेत्र के हरिनगर ग्राम से दिगम्बर झा एवं बटोही झा अग्रणी तांत्रिक कलाकारों के रूप में उभरे, जिन्होंने सर्वप्रथम इन रूपकारों को कागज़ में उकेरना प्रारंभ किया था। उनके पूर्वज देवी काली के उपासक थे एवं उसी आधार पर उन्होंने चित्रण कार्य आरंभ किया। बटोही झा के बाद में यह चित्र परम्परा उनके पुत्र धीरेन्द्र झा एवं पुत्र वधु विद्या देवी ने अपनाई, जिन्होंने देवी काली को दशमहाविद्या यंत्रों के साथ, नव यंत्रों सहित नव दुर्गा, विष्णु के दशावतार व सर्वतोभद्र यंत्र आदि यंत्रो को चित्रों में स्थान दिया। इसी गाँव के दिगम्बर झा के पुत्र कृष्णानंद झा ने भी इन तंत्ररूपों को चित्रित कर इस चित्रण परम्परा को प्रोत्साहन दिया। कृष्णानंद झा के पुत्र संजीव कुमार झा भी वर्तमान में इस चित्रकला में कार्यरत हैं जो इन देवी देवताओं को तंत्र रूपों, श्री यंत्र, सूर्य यंत्र, बुद्ध यंत्र एवं मंगल प्रतीकों को चित्रित करते हैं। चूंकि मिथिलांचल प्राचीन काल से तांत्रिक विचारों से प्रभावित रहा है, इसलिए इन चित्रों में मिथिला में प्रचलित तंत्रवाद की झलक स्पष्ट मिलती है। देवी काली,देवी छिन्नमस्तिका, देवी दुर्गा व लक्ष्मी आदि के चित्रांकन में कुछ विशेष प्रतिमाओं के साथ यंत्रों को उकेरा जाता हैं। सामान्यतः तांत्रिक प्रतीकों के परिपूर्ण इस चित्रकला में कुमकुम, केसर और कस्तूरी आदि से प्राप्त रंगों का प्रयोग किया जाता है, परन्तु वर्तमान में इन चित्रों का प्रारूप विभिन्न माध्यमों में देखा जा सकता है[3]।

बटोही झा: (1975) इन्हें लाल बाबा के नाम से भी जाना जाता था, यह मधुबनी के एक स्थानीय मंदिर में पुजारी के रूप में सेवारत रहे। यह मिथिला के उन पुरुष कलाकारों में से एक हैं, जो मिथिला में तान्त्रिक चित्रों के

CamScanner

लिये जाने जाते हैं। यह चित्र मिथिला के ब्राह्मण पुजारियों द्वारा निर्मित किये जाते हैं। यह तान्त्रिक पुजारी अभ्यास के रुप में अक्सर अपने कामों में गूढ़ तत्वों को शामिल करते थे। पूजा विधि-विधान के दौरान वे सिंदूर व हल्दी आदि से देवी-देवताओं के रेखाचित्र भूमि पर उकेरते व उन्हें घूप आदि दिखा कर पूजा आरम्भ करते हैं। इन रेखाचित्रों में देवताओं के साथ ही उनसे सम्बंधित यन्त्रों एवं मंत्रों का चित्रण भी विधि अनुसार किया जाता है[4]। इन शक्तियों में से कुछ देवियों में दस महाविद्याओं का अंकन बटोही झा द्वारा अधिक देखने को मिलता है। इस चित्र में इन देवियों से सम्बंधित यंत्रों, प्रतीको व उनसे सम्बंधित मन्त्रों को ज्यामितीय रूप में दर्शाया गया है। इन देवियों में श्री काली, श्री तारा, श्री षोडशी, श्री भुवनेश्वरी, श्री भैरवी, श्री छिन्नमस्तिका, श्री धूमावती, श्री बगलामुखी, श्री मतंडी एवं श्री कमला देवी को सम्मिलित कर दस देवियों का अंकन मिलता है। यह चित्र तंत्र विद्या से परिपूर्ण देवियों को तंत्र से भी जोड़ते हैं, जिनका प्रचलन मैथिल में प्राचीन समय से देखने को मिलता है। बटोही झा के साथ ही उनके पुत्र धीरेन्द्र झा द्वारा भी हम इन दस महाविद्याओं का अंकन पाते हैं।

धीरेन्द्र झा एवं विद्या देवी: धीरेन्द्र झा मधुबनी जिले के जितवारपुर के समीप हरिनगर से हैं। इन्होंने यह चित्रण परम्परा अपने पिता से ग्रहण की और चित्रण कार्य शुरू किया। यह खुद भी एक पुजारी हैं और लगभग पचास वर्षों से इस लोककला में कार्यरत हैं। इनके द्वारा बनाये चित्रों में यन्त्रों सहित दश महाविद्या, विष्णु के दशाअवतार व उनके यन्त्र, नवदुर्गा व उनके यन्त्र आदि देवी-देवताओं के चित्रण देखते हैं। वर्तमान समय में धीरेन्द्र झा व उनकी पत्नी विद्या देवी दोनों ही इस तांत्रिक लोककला में कार्यरत हैं। इनके द्वारा निर्मित चित्रों में रंगों की बहुलता अधिक न होकर केवल एक या दो रंगों का समायोजन होता है। इनके चित्रों में काला, नीला, गहरा नीला आदि गहरे रंगों द्वारा रेखांकन व उन्हीं रंगों को हल्का कर भरावन कार्य देखने को मिलता है, जिससे चित्र एक रंग की विभिन्न तानो में दिखते हैं। उन्होंने चित्रकला की अपनी शैली बनाई है, जिनमें चित्रों में बार्डर विभिन्न फूल-पत्ती आदि के अलंकरण से निर्मित होते हैं।

कृष्णानन्द झा: (1938-2018)कृष्णानन्द झा मिथिला क्षेत्र के उन पुरुष कलाकारों में से एक थे, जिन्होंने तान्त्रिक विषयों में कार्य किया। इनके पिता दिगम्बर झा महापात्र ब्राह्मण के एक पुजारी होने के साथ-साथ पूजा-पाठ में तांत्रिक संकेतों को भी दशाते थे। इन्होंने तांत्रिक आकृतियों को चित्रित करने में कुशलता प्राप्त की व सर्वप्रथम 1966 में भास्कर कुलकर्णी द्वारा इनके कुछ चित्रों को खरीदा गया। कुलकर्णी जी की सहायता से इन्होंने चित्रों के माध्यम से काफी आय अर्जित की। इन्होंने इन तंत्र रूपों को चित्ररूपों में उकेरना शुरू किया और आगे चलकर यह परम्परा इनके पुत्र कृष्णानन्द झा द्वारा अपनायी गई। कृष्णानद झा ने अपने पिता से शिक्षण के दौरान संस्कृत का भी ज्ञान अर्जित किया, जिससे वे महाविद्या से सम्बंधित तांत्रिक ग्रंथो का अध्ययन कर सकें[5]। इन्होंने इन चित्रों में तान्त्रिक रूपों को रेखांकन पद्धति में चित्रित किया, जबकि इसके विपरीत बटोही झा के परिवार में यह चित्रण कार्य रंगों के भरावन कार्य से किया जाता है। कृष्णानंद झा ने चित्रों में महाकाली विद्या, विष्णु दशावतार, रासलीला आदि देवी-देवताओं का चित्रण बखूबी किया है। इन्होंने प्राकृतिक रंगों, रोली आदि को गोंद से घोल कर रेखाओं द्वारा चित्रों को पूर्ण किया। इनके चित्रों में रेखायें अधिक महीन एवं कोमल दिखाई देती हैं एवं वस्त्रों आदि पर भी महीन रेखाओं द्वारा सुन्दर देवी-देवताओं के अलंकरण देखने को मिलते हैं[6]। 18 जून 2018 को इनका देहान्त हुआ। वर्तमान समय में इनके पुत्र संजीव कुमार झा भी इन्हीं तान्त्रिक रूपाकारों के संयोजन कार्य में कार्यरत हैं।

इसी शैली में निर्मित एक चित्र तांत्रिक गुरु का है, जिसकी माप "22x30"है। कृष्णानंद झा कहते हैं कि इस चित्र पर काम करते समय उनके मन में उन तांत्रिक गुरुओं का ध्यान आया, जिन्होंने बचपन में उनका मार्गदर्शन किया था। इस चित्र में कुंडलिनी योग के एक तांत्रिक गुरु को उभरी हुई भुजाओं के साथ एक बाघ की खाल पर बैठे दर्शाया गया हैं। पवित्र धागे और प्रार्थना मोतियों के साथ उनका ऊपरी धड़, मुख एवं हाथ सफेद है, जबकि सूक्ष्म लाल फूलों से सजा हुआ उनका आगे का वस्त्र, बाघ की त्वचा से खुद को अलग करता है। बाघ का सिर, उभरी हुई जीभ, चित्र के निचले भाग में चित्रित है व बाघ के पैर और पंजे निचे एवं उपरी दोनों हिस्से

CamScanner

में हैं। कृष्णानंद झा द्वारा निर्मित एक चित्र 'देवी डाकिनी' जो तीन सिर और चार हाथों के साथ चित्रित किया जाता है। उनके एक हाथ में कमल, दुसरे में एक पांडुलिपि, तीसरे में अस्त्र, जबकि चौथा हाथ खाली दर्शाया गया है, देवी महान भगवान शिव की प्रवण आकृति पर खड़ी है। चित्र के निचले भाग में, कमल में कुंडलित नाग, कुंडलिनी योग की एक तांत्रिक देवी को प्रदर्शित करता हैं। इसके साथ ही नाग देव की आकृति आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। इस चित्र में कृष्णानंद झा ने दोनों आकृतियों को समान रूप मान कर देवी और देवता दोनों को सामान रंग में दर्शाया है। यह सम्पूर्ण चित्र सूक्ष्म ज्यामितीय एवं फूल-पत्ती के अलंकरण से परिपूर्ण है [7]।

संजीव कुमार झा(गोलू झा): कृष्णानन्द झा के पुत्र गोलू झा भी इस चित्रण शैली में कार्यरत हैं। गोलू झा वर्तमान समय में तंत्र रूप से परिपूर्ण चित्रों को संयोजित करते हैं जिनमें स्वस्तिक, गोला, चक्र, देवी-देवताओं को यंत्रों सहित दशति हैं। मिथिला में इन ज्यामितीय रूपाकारों को विशेष प्रतीकों के रूप में दर्शाया गया है "यहाँ बिंदु या बिंदी सम्पूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतीक है। इन मूल तत्वों एवं प्रतीकों में से कुछ तांत्रिक यंत्र और ब्रह्मांडीय आरेखों में से भी जुड़े हैं। जैसे उलटे त्रिकोण में केंद्र में बिंदु देवी काली के यंत्र को दर्शाता है।

इसी प्रकार अन्य पूजनीय देवी-देवता एवं उनसे सम्बंधित यंत्रों को विशेष मंगल कार्यों में चित्रित करने का प्रचालन मिथिला में है। हालाँकि कुछ विशेष अनुष्ठानो को केवल पुरुष या पुजारी ही करते आये है। यहाँ तान्त्रिक अनुष्ठान का महत्व तो रहा ही साथ ही पौराणिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत एवं भग्वतपुराण आदि का चित्रण कार्य भी विकसित रहा, जो शिव-शक्ति, सीता-राम, राधा-कृष्ण आदि के चित्रों के लिये स्त्रोत सामग्री के रुप में उपलब्ध थे। इसके अतिरिक्त विद्यापति के गीत एवं भक्ति प्रेम संपूर्ण मैथिल व आस-पास के क्षेत्रों को संतृप्त करते रहे। यह सभी चित्र इनके जीवन के मूल स्रोत के रूप में प्रदर्शित होते हैं। इन चित्रकारों ने पारंपरिक चित्रण पद्धति को आत्मसात कर समकालीन कला जगत में नवीन माध्यमो एवं विषयों को अपनाकर उनको मौलिक स्वरूप प्रदान किया। फलस्वरूप मैथिल चित्रकला वैश्विक परिदृश्य में अपनी एक विशेष पहचान प्राप्त करने सफल रही है।

---

1 . Mithila Painters- Five Village Artists from Madhubani ,India, Mithila Art Institute, Video

2 . https://exhibitions.asianart.org/wp-content/uploads/sites/7/2019/09/4507_18_Painting_Is_My_Everything_Large_Print_Labels_Final.pdf

3 . https://umsas.org.in/madhubani-painting-details/

4 . asianhistory.tumblr.com, Asian History

5 . Mithila Painters: Five village artists from Madhubani, India, Joseph Elder with assistance Paul Donowitz and Raymond L. Owens, 1999, p.9

6 . सर्वेक्षण, साक्षात्कार, कृष्णानंद झा

7 . https://peterzirnis.com/post/44807933665/the-tantric-gods-of-krishnanand-jha

CamScanner

1

2

3

4

5

6

7

Painting Details:

1. Photograph of Mithila paintings, by William Archer in 1934.
2. Naina Jogin, Madhubani, Bihar.
3. *Govind Maharaj Playing with Mother Ganga*, 1982, Ink and colour on paper, H. 22 1/2 in x W. 30 in, Shanti Devi (Indian, b. 1926) Asian Art Museum.
4. A Female Ghost, 1981, Ink and Color on Paper, 30 inx22 in, Karpoori Devi, Ranti, Collection in South Asian Art.
5. The Ten Great Mothers, the dasa-maha-vidya of Tantra, Batohi Jha, Madhubani, Bihar.
6. Nav Durga, Febric colour on paper,46"X33", 2015, Dherendra Jha, Madhubani,Bihar.
7. The Tantric Guru "22x30" by Krishna Nand Jha, Madhubani, Bihar

CamScanner